नरक गति के दुःख

नारकी किसे कहते हैं?

नारकी के पर्यायवाची - नारत, नरक, निरय,निरत

ना+रत = स्वयं अथवा परस्पर प्रीती को प्राप्त नहीं होते

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव में परस्पर रमते नहीं

नरक -> नरान = मनुष्यों को कायन्ति = क्लेश पहुंचावें

निरय -> जिनका पुण्यकर्म चला गया है

निरत -> जो हिंसादि असमीचीन कार्यों में रत हैं

7 नरक

- रत्नप्रभा
- शर्कराप्रभा
- बालुकाप्रभा
- पंकप्रभा
- धूमप्रभा
- तमप्रभा
- महातमप्रभा

नरकों की भूमि और नदियों का वर्णन

तहाँ भूमि परसत दुख इसो, बिच्छू सहस डसे नहिं तिसो ।
तहाँ राध-श्रोणितवाहिनी, कृमि-कुल-कलित, देह-दाहिनी ॥10॥

- तहाँ= उस नरक में
- भूमि= धरती
- परसत= स्पर्श करने से
- इसो= ऐसा दुख= दुःख
- सहस= हजारों
- डसे= डंक मारें
- नहिं तिसो= उसके समान नहीं
- तहाँ= वहाँ
- राध-श्रोणितवाहिनी= रक्त और मवाद बहानेवाली वितरणी नामक नदी
- कृमिकुलकलित= छोटे-छोटे क्षुद्र कीड़ों से भरी
- देहदाहिनी= शरीर में दाह उत्पन्न

तहाँ भूमि परसत दुख इसो, बिच्छू सहस डसे नहिं तिसो ।

- उन नरकों की भूमि का स्पर्शमात्र करने से नारकियों को इतनी वेदना होती है कि हजारों बिच्छू एकसाथ डंक मारें, तब भी उतनी वेदना न हो

जन्म के दुख

जन्मते ही तीक्ष्ण शस्त्रों पर गिरकर उछलते हैं

नरक	कितना उछलते हैं
1st नरक	7.81 योजन ऊँचा
2nd नरक	15.62 योजन ऊँचा
3rd नरक	31.25 योजन ऊँचा
4th नरक	62.5 योजन ऊँचा
5th नरक	125 योजन ऊँचा
6th नरक	250 योजन ऊँचा
7th नरक	500 योजन ऊंचा

1 योजन में 4 कोस
1 कोस में 2 मील
1 मील में 1.5 KM

याने 1 योजन में 4 x 2 x 1.5 KM = 12 KM

तहाँ राध-श्रोणितवाहिनी, कृमि-कुल-कलित, देह-दाहिनी ॥10॥

- उस नरक में एक वैतरणी नदी है, जिसमें शांतिलाभ की इच्छा से नारकी जीव कूदते हैं, किन्तु वहाँ तो उनकी पीड़ा अधिक भयंकर हो जाती है ।

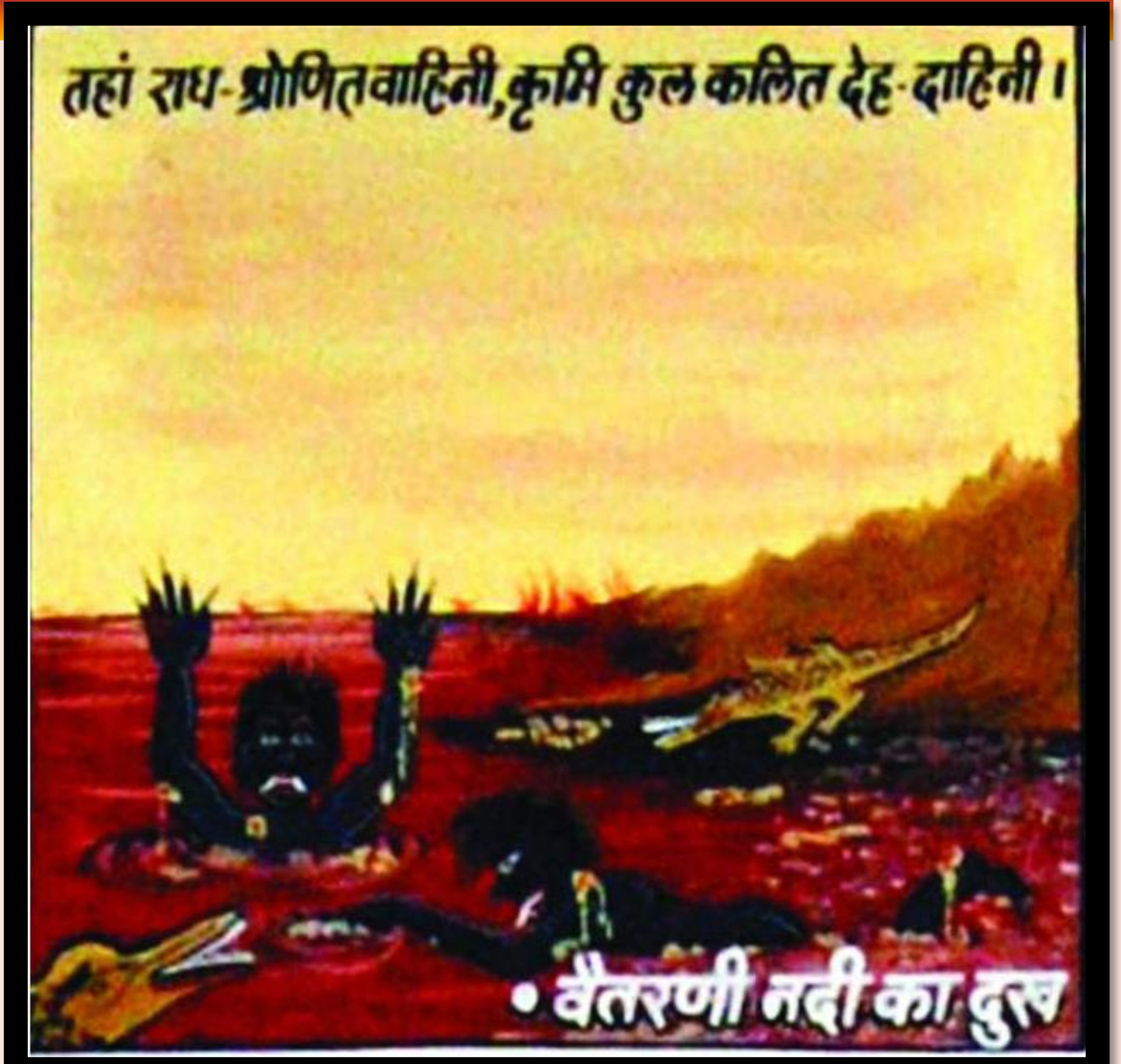

नरकों के सेमल वृक्ष तथा सर्दी-गर्मी के दुःख

सेमर तरु दलजुत असिपत्र, असि ज्यों देह विदारैं तत्र । मेरु समान लोह गलि जाय, ऐसी शीत उष्णता थाय॥11॥

- तरु= सेमल के वृक्ष
- दलजुत= पत्तेंवाले सेमर
- असिपत्र ज्यों= तलवार की धार की भाँति तीक्ष्ण
- असि ज्यों= तलवार की भाँति
- देह= शरीर को
- विदारैं= चीर देते हैं
- तत्र= उन नरकों में,
- मेरु समान= मेरु पर्वत के बराबर
- लोह= लोहे का गोला भी
- गलि= गल जाय
- उष्णता=गरमी
- थाय= होती है

सेमर तरु दलजुत असिपत्र, असि ज्यों देह विदारैं तत्र ।

- उन नरकों में अनेक सेमल के वृक्ष हैं, जिनके पत्ते तलवार की धार के समान तीक्ष्ण होते हैं ।
- जब दुःखी नारकी छाया मिलने की आशा लेकर उस वृक्ष के नीचे जाता है, तब उस वृक्ष के पत्ते गिरकर उसके शरीर को चीर देते हैं ।

मेरु समान लोह गलि जाय, ऐसी शीत उष्णता थाय

शारीरिक दुख

- **कैसी गर्मी ?** - कि एक लाख योजन ऊँचे सुमेरु पर्वत के बराबर लोहे का पिण्ड भी पिघल जाता है तथा
- **कैसी ठण्डी?-** सुमेरु के समान लोहे का गोला भी गल जाता है ।

कौन से नरक में गर्मी/ठण्डी?

उष्णता

- १
- २
- ३
- ४
- ५.७५ नरक में

ठण्डी

- ५.२५
- ६
- ७ नरक में

नरकों में अन्य नारकी, असुरकुमार तथा प्यास का दुःख

तिल-तिल करैं देह के खण्ड, असुर भिड़ावैं दुष्ट प्रचण्ड ।
सिन्धुनीर तैं प्यास न जाय, तो पण एक न बूँद लहाय॥12॥

- तिल-तिल= तिल्ली के दाने बराबर
- करें= कर डालते हैं
- देह के= शरीर के
- खण्ड= टुकड़े
- असुर= असुरकुमार जाति के देव
- भिड़ावैं= लड़ाते हैं
- दुष्ट= क्रूर
- प्रचण्ड= अत्यन्त
- सिन्धुनीर तैं= समुद्रभर पानी पीने से भी
- न जाय= शांत न हो,
- तो पण= तथापि
- एक बूँद= एक बूँद भी न
- लहाय= नहीं मिलती ।

तिल-तिल करैं देह के खण्ड,

परस्परकृत दुख :

वे एक-दूसरे के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं, तथापि उनके शरीर बारम्बार पारे की भाँति बिखर कर फिर जुड़ जाते हैं ।

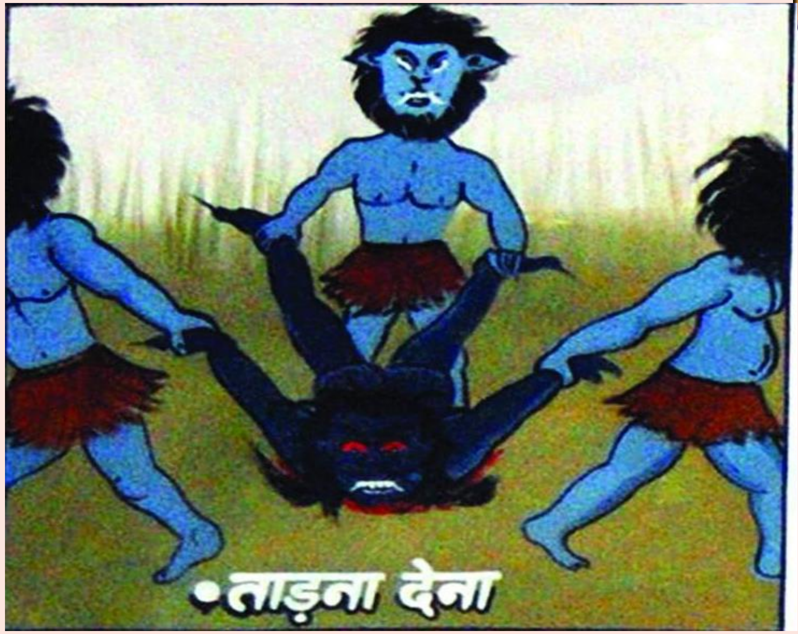

वैक्रियिक शरीर

जो विक्रियाओं को कर सके ऐसे देव, नारकियों के शरीर को वैक्रियिक शरीर कहते हैं

विक्रिया= विचित्र क्रियाएं

छोटे-बड़े, एक-अनेक, पृथक-अपृथक आदि विचित्र क्रियाएं

विक्रिया

पृथक

शरीर से भिन्न अलग रूप बना लेना

एकत्व

शरीर को ही अलग रूप दे देना

- नारकी के अपृथक विक्रिया होती है
- वो अपने शरीर को ही बिच्छु, सांप, लट, तलवार, भाला आदि बना लेते हैं

शरीर से दुख

- सातवें नरक के नारकी के 5 करोड़,68 लाख, 99 हजार, 584 रोग होते हैं

असुर भिड़ावैं दुष्ट प्रचण्ड

आगंतुक दुख :

- संक्लिष्ट परिणामवाले अम्बरीष आदि जाति के असुरकुमार देव तीसरे नरक तक जाकर
- नारकियों को अपने अवधिज्ञान के द्वारा
- क्रूरता और कुतूहल से आपस में लड़ाते हैं और स्वयं आनन्दित होते हैं ।

सिन्धुनीर तैं प्यास न जाय,
तो पण एक न बूँद लहाय॥12॥

- **कैसी प्यास?**- मिल जाये तो पूरे महासागर का जल भी पी जायें, तथापि तृषा शांत न हो;
- **मिलता क्या?**- किन्तु पीने के लिए जल की एक बूँद भी नहीं मिलती ॥12 ॥

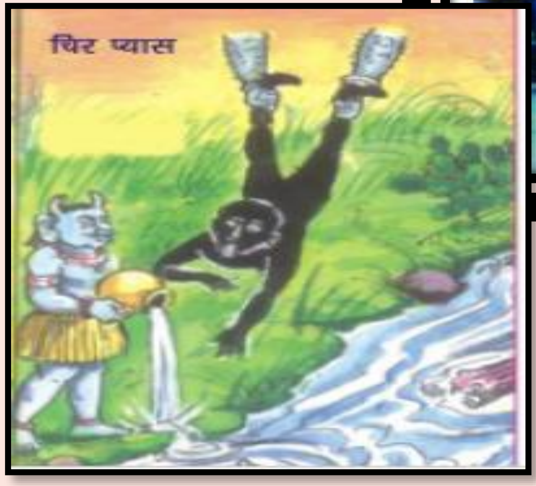

नरकों की भूख, आयु और मनुष्यगति प्राप्ति का वर्णन

तीनलोक को नाज जु खाय, मिटै न भूख कणा न लहाय ।
ये दुख बहु सागर लौं सहै, करम जोगतैं नरगति लहै ॥13॥

- नाज= अनाज
- जु खाय= खा जाये
- मिटै= शांत
- भूख= क्षुधा
- कणा= एक दाना भी
- न लहाय= नहीं मिलता
- ये दुख= ऐसे दुःख
- बहु सागर लौं= अनेक सागरोपमकाल तक
- सहै= सहन करता है,
- करम जोगतैं= किसी विशेष शुभकर्म के योग से
- नरगति= मनुष्यगति लहै= प्राप्त करता है ।

तीनलोक को नाज जु खाय, मिटै न भूख कणा न लहाय ।

- **कैसी भूख**? -यदि मिल जाये तो तीनों लोक का अनाज एकसाथ खा जायें, तथापि क्षुधा शांत न हो;
- **मिलता क्या**? -परन्तु वहाँ खाने के लिए एक दाना भी नहीं मिलता ।
- **तो क्या खाते** हैं? -अत्यंत दुर्गंधवाली अत्यल्प मिट्टी

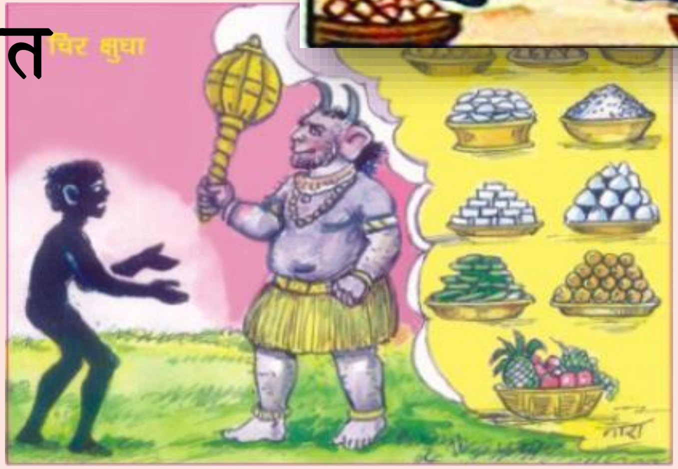

नरक की मिट्टी की दुर्गंध का प्रभाव

नरक	दूरी जहां तक के जीव मर जाते हैं
१	१ कोस
२	१.५ कोस
३	२ कोस
४	२.५ कोस
५	३ कोस
६	३.५ कोस
७	४ कोस

ये दुख बहु सागर लौं सहै, करम जोगतैं नरगति लहै॥13॥

- **ये दुख कब तक भोगता है?**
  - मरण पर्यंत
- **फिर क्या होता है?**
  - फिर किसी शुभकर्म के उदय से यह जीव मनुष्यगति प्राप्त करता है|

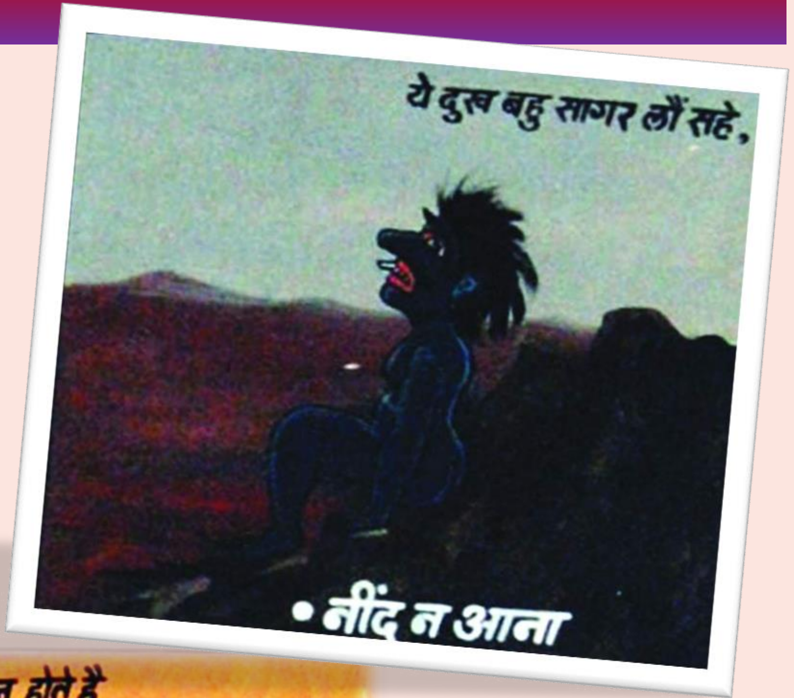

कौन से नरक की आयु कितनी होती है?

नरक	उत्कृष्ट आयु
१	१ सागर
२	३ सागर
३	७ सागर
४	१० सागर
५	१७ सागर
६	२२ सागर
७	३३ सागर

आयु पूर्ण होने पर शरीर कापूरवत उड़ जाता है

नारकी के दुख

आगंतुक	• असुरकुमार देवों के द्वारा
शारीरिक	• भूख-प्यास के दुख, परस्पर कृत दुख
क्षेत्रजन्य	• जन्म के, शीत-उष्णता, भूमी, वृक्ष, नदी आदि के द्वारा दुख
मानसिक	• कषायों से दुख
वैभाविक	• मारकाट के परिणामों से तीव्र संक्लेश परिणामों से दुख

नारकी मरकर कहां उत्पन्न हो सकते हैं?

पर्याप्तक संज्ञी तिर्यंच

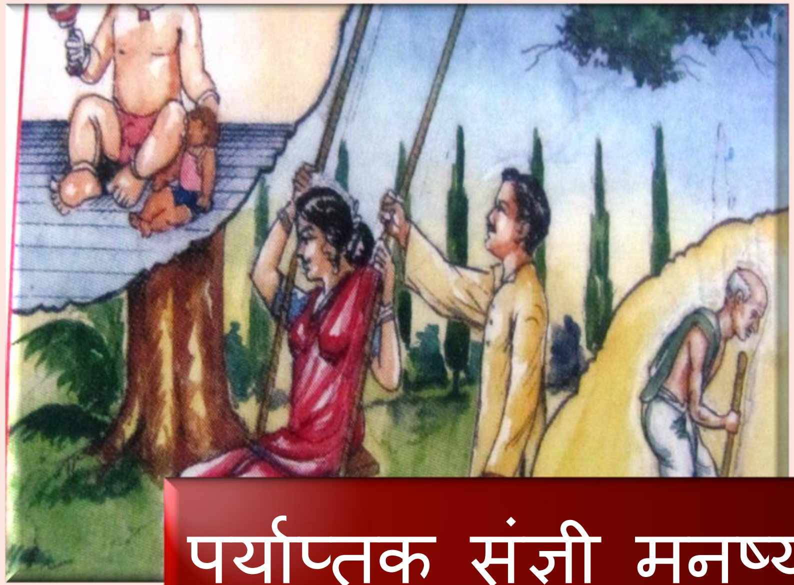

पर्याप्तक संज्ञी मनुष्य

नरक गति की प्राप्ति का कारण

बहुत आरंभ

- बहुत हिंसादि के परिणाम

बहुत परिग्रह

- तीव्र मूर्छा का परीणाम

- Reference : श्री गोम्मटसार जीवकाण्डजी, श्री जैनेन्द्रसिद्धान्त कोष, तत्त्वार्थसूत्रजी

- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

  - sarikam.j@gmail.com
  - ☎: 0731-2410880